



2026:AHC: 126301-DB

27.4.2026 को सुरक्षित

9.6.2026 को पारित

इलाहाबाद उच्च न्यायालय

आपराधिक अपील संख्या - 2457/2002

राम नगीना यादव

.....अपीलार्थी(गण)

बनाम

उत्तर प्रदेश राज्य

.....प्रत्यर्थी(गण)

अपीलार्थी(गण) के अधिवक्ता : अखिलेश सिंह, आई.जे.एस. यादव, के.एस. तिवारी

प्रत्यर्थी(गण) के अधिवक्ता : आनंद कुमार श्रीवास्तव, आनंद कुमार श्रीवास्तव,
अतुल कुमार श्रीवास्तव, शासकीय अधिवक्ता

और 1 संबंधित वाद

न्यायालय संख्या - 44

माननीय न्यायमूर्ति सिद्धार्थ

माननीय न्यायमूर्ति विनय कुमार द्विवेदी

(द्वारा माननीय न्यायमूर्ति सिद्धार्थ)

“अस्वीकरण: अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।”



1. अपीलकर्ताओं श्याम नारायण यादव और राम नारायण उर्फ नारायण यादव द्वारा क्रमशः प्रस्तुत संबद्ध आपराधिक अपील संख्या 2498 और 2524 वर्ष 2002 को अपीलकर्ताओं की मृत्यु के कारण इस न्यायालय द्वारा आदेश दिनांक 27.4.2026 के द्वारा उपशमित मानकर पहले ही खारिज किया जा चुका है।

2. अपीलकर्ता के विद्वान अधिवक्ता श्री आर्यन श्रीवास्तव, श्री चंद्र शेखर पांडेय और श्री के.एस. तिवारी की सहायता से विद्वान वरिष्ठ अधिवक्ता श्री पी.सी. श्रीवास्तव; सूचनाकर्ता के विद्वान अधिवक्ता श्री आनंद कुमार श्रीवास्तव; राज्य के लिए विद्वान अपर शासकीय अधिवक्ता-प्रथम श्री जी.एन. कनौजिया को सुना, अभिलेख पर मौजूद सामग्री के साथ-साथ आपराधिक अपील संख्या 2457 वर्ष 2002 में आक्षेपित विचारण न्यायालय के निर्णय का परिशीलन किया।

3. अपीलकर्ता संख्या 1 के विद्वान अधिवक्ता श्री अनुज श्रीवास्तव; सूचनाकर्ता के विद्वान अधिवक्ता श्री आनंद कुमार श्रीवास्तव; राज्य के लिए विद्वान अपर शासकीय अधिवक्ता-प्रथम श्री जी.एन. कनौजिया को सुना, अभिलेख पर मौजूद सामग्री के साथ-साथ आपराधिक अपील संख्या 2495 वर्ष 2002 में आक्षेपित विचारण न्यायालय के निर्णय का परिशीलन किया गया।

4. कार्यालय आख्या दिनांक 08.10.2025 के अनुसार, आपराधिक अपील संख्या 2495 वर्ष 2002 में अपीलकर्ता संख्या 2, बदन राजभर की मृत्यु होने की आख्या है।

तदनुसार, अपीलकर्ता संख्या 2, बदन राजभर के संबंध में अपील को 27.4.2026 को उपशमित मानकर खारिज कर दिया गया था।

5. आपराधिक अपील संख्या 2457 और 2495 वर्ष 2002 सत्र न्यायाधीश, गाजीपुर द्वारा सत्र परीक्षण संख्या 157 वर्ष 1999 (राज्य बनाम राम नगीना यादव उर्फ नगीना यादव और अन्य) में पारित निर्णय और आदेश दिनांक 18.6.2002 के विरुद्ध दाखिल की गई हैं, जिसके द्वारा

“अस्वीकरण: अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।”



अपीलकर्ताओं को भारतीय दंड संहिता की धारा 302/149 के अंतर्गत आजीवन कारावास और भारतीय दंड संहिता की धारा 147 के अंतर्गत एक वर्ष के कठोर कारावास के लिए दोषसिद्ध और दंडादिष्ट किया गया है।

6. अभियोजन का मामला यह है कि सूचनाकर्ता का भतीजा, दूधनाथ राजभर, अर्थात् त्रिभुवन राजभर, सह-ग्रामवासियों धनई और शंभू के साथ जखनिया बाजार से शाम लगभग 7.30 बजे अपने गांव लौट रहा था। जैसे ही वह कावला जखनिया के दक्षिण में पहुंचा, झाड़ियों में छिपे अभियुक्त नगीना यादव, श्याम नारायण यादव, वीरेंद्र यादव, राम नारायण यादव और बदन राजभर सड़क पर आ गए और त्रिभुवन राजभर को रोक लिया, राम नगीना यादव और श्याम नारायण यादव ने त्रिभुवन राजभर को मारने के लिए ललकारा क्योंकि वह उनके स्कूल के कामकाज का बहुत विरोध करता था और फिर वीरेंद्र यादव, बदन राजभर और राम नारायण यादव ने अपने हाथों में लिए देशी तमंचों से उस पर गोलियां चला दीं जिससे उसकी मौके पर ही मृत्यु हो गई। धनई राजभर और शंभू राजभर, जो उस समय मृतक के साथ थे, भागे और सूचनाकर्ता को घटना की सूचना दी। सूचनाकर्ता घटना स्थल पर गया और त्रिभुवन राजभर का शव पड़ा हुआ देखा। उसने संगम भारद्वाज से प्रार्थना पत्र लिखवाया और प्रथम सूचना रिपोर्ट दर्ज कराने के लिए उसे थाने को दे दिया।

7. पंचायतनामा, पोस्टमार्टम की आवश्यक औपचारिकताएं पूरी करने, गवाहों के बयान दर्ज करने के बाद, अभियुक्तों के विरुद्ध आरोप-पत्र दाखिल किया गया। विचारण न्यायालय ने अभियुक्तों के विरुद्ध आरोप विरचित किए। उन्होंने आरोपों से इनकार किया और विचारण की मांग किया।

“अस्वीकरण: अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।”



8. अभियोजन पक्ष ने अभियोजन मामले को साबित करने के लिए अभियोजन गवाह-1, दूध नाथ राजभर, जो सूचनाकर्ता है, को प्रस्तुत किया। वह स्पष्ट रूप से घटना का चश्मदीद गवाह नहीं है। उसकी रिपोर्ट धनई राजभर (अभियोजन गवाह-2) और शंभू राजभर (अभियोजन गवाह-3) से प्राप्त सूचना पर आधारित थी। हालांकि, अपराध के मंतव्य के संबंध में उसने कहा कि मृतक, त्रिभुवन राजभर, एक सामाजिक व्यक्ति था और राम नगीना यादव (अपीलकर्ता) के स्कूल में होने वाले गलत कार्यों के विरुद्ध शिकायतें करता रहता था। राम नगीना यादव स्कूल का प्रधानाचार्य था और अपीलकर्ता, श्याम नारायण यादव (अब मृत) स्कूल में शिक्षक था। इसलिए उन्होंने अन्य सह-अभियुक्तों वीरेंद्र यादव, राम नारायण यादव और बदन राजभर को ललकारा और त्रिभुवन राजभर की हत्या का अपराध कारित करवाया।

9. अभियोजन गवाह-2, धनई राजभर का घटना के चश्मदीद गवाह के रूप में परीक्षण किया गया। उसने साबित किया कि उसने अभियोजन गवाह-1 को घटना की सूचना दी थी।

10. अभियोजन गवाह-3, शंभू राजभर ने भी विचारण न्यायालय के समक्ष इसी तरह गवाही दिया।

11. अभियोजन गवाह-4, कांस्टेबल, राम सूरत राम, एक औपचारिक गवाह था, जिसने पुलिस स्टेशन की जनरल डायरी में रिपोर्ट दर्ज की थी।

12. अभियोजन गवाह-5, डॉ. अरुण कुमार पांडेय ने मृतक की पोस्टमार्टम रिपोर्ट को साबित किया, जो इस प्रकार है:-

13. मृत्यु पूर्व चोटें-

“अस्वीकरण: अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।”



1. दाहिने कान के पास 3 सेमी x 2 सेमी का आग्नेयास्त्र का प्रवेश घाव, घाव के चारो ओर कालापन और गुदना मौजूद। अनियमित किनारे। घाव की दिशा में जांच करने पर, बाएं कनपटी क्षेत्र से एक धातु का बेलनाकार बाह्य पदार्थ बरामद हुआ।

2. बायीं निप्पल के पास 10 बजे की स्थिति में 3 सेमी x 6 सेमी का आग्नेयास्त्र का प्रवेश घाव, कालापन और गुदना मौजूद, अनियमित किनारे।

3. दाहिनी गर्दन के पिछले हिस्से पर सी-4 रीढ़ पर 4 सेमी का आग्नेयास्त्र का निकास घाव जो चोट संख्या 2 से जुड़ा हुआ है।

4. दाहिने हाइपोकॉन्ड्रिक क्षेत्र पर स्थित 3 सेमी x 5 सेमी का आग्नेयास्त्र का घाव, कालापन और गुदना मौजूद, अनियमित किनारे।

5. टी-11 रीढ़ के पार्श्व में 4 सेमी बायीं ओर स्थित 4 सेमी x 5 सेमी का आग्नेयास्त्र का निकास घाव जिसके किनारे बाहर की ओर मुड़े हुए हैं, जो चोट संख्या 4 से जुड़ा हुआ है।

मृत्यु का कारण मृत्यु पूर्व आग्नेयास्त्र की चोटों के परिणामस्वरूप रक्तस्रावी सदमा पाया गया।

14. अभियोजन गवाह-6, इस प्रकरण के विवेचना अधिकारी, उप-निरीक्षक ओम प्रकाश सिंह ने इस मामले की विवेचना की और विवेचना के दौरान उसने बाद में इस मामले में तीन अन्य व्यक्तियों अर्थात् चंद्र भान यादव, धीरेंद्र यादव उर्फ धुरंधर गिरि और एक अन्य अभियुक्त, जिसकी विचारण के दौरान मृत्यु हो गई, को अभियुक्त के रूप में फंसाया। विचारण न्यायालय ने पाया कि विवेचना अधिकारी, अभियोजन गवाह-6 द्वारा की गई विवेचना दोषपूर्ण थी।

15. कांस्टेबल ऋषिदेव यादव का अभियोजन गवाह-7 के रूप में परीक्षण किया गया, जिसने यह साबित किया कि वह मृतक के शव को पोस्टमार्टम के लिए ले गया था।

“अस्वीकरण: अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।”



16. दंड प्रक्रिया संहिता की धारा 313 के अंतर्गत अभियुक्तों का परीक्षण किया गया, जहां उन्होंने अभियोजन के मामले से इनकार किया और इस मामले में झूठा फंसाए जाने का दावा किया। उन्होंने अपने बचाव में कोई बचाव गवाह प्रस्तुत नहीं किया। हालांकि, उन्होंने पंपिंग सेट की पासबुक, अन्य मामलों के आरोप-पत्र और प्रथम सूचना रिपोर्ट के रूप में तीन दस्तावेजी साक्ष्य प्रस्तुत किए।

17. विरोधी तर्कों को सुनने के पश्चात, हम पाते हैं कि अपीलकर्ता के विद्वान अधिवक्ता का पहला तर्क यह है कि प्रथम सूचना रिपोर्ट समय-पूर्व दर्ज की गई है। हम अभिलेख से पाते हैं कि घटना 5.8.1998 को शाम 7.30 बजे हुई और घटना की प्रथम सूचना रिपोर्ट उसी दिन रात 8.45 बजे दर्ज की गई। अभियोजन गवाह-4, कांस्टेबल राम सूरत प्रसाद ने साबित किया कि उसी दिन रात 22.50 बजे मजिस्ट्रेट को विशेष रिपोर्ट भेजी गई थी। पंचायतनामा के फर्द के साथ सभी पुलिस कागजात भेजे गए थे और अपराध संख्या तथा अभियुक्तों के नामों का उल्लेख किया गया था इसलिए, हमारा विचार है कि प्रथम सूचना रिपोर्ट समय-पूर्व दर्ज नहीं की गई थी।

18. अपीलकर्ता के विद्वान अधिवक्ता का दूसरा तर्क यह है कि अभियोजन गवाह-1 द्वारा न्यायालय के समक्ष मृतक, त्रिभुवन राजभर के संबंध में स्थापित अपराध के मंतव्य का कोई दस्तावेजी साक्ष्य नहीं है कि वह अपीलकर्ता राम नगीना यादव और श्याम नारायण के स्कूल के कामकाज की शिकायत करता था। यदि कोई शिकायत की गई थी, तो वह लिखित में की जानी चाहिए थी और उसे न्यायालय के समक्ष प्रस्तुत किया जाना चाहिए था। हम पाते हैं कि अपीलकर्ता के विद्वान अधिवक्ता के तर्क में सार है। भले ही मंतव्य समाप्त हो जाए, अभियोजन गवाह-2 और अभियोजन गवाह-3 का प्रत्यक्ष चश्मदीद गवाह का साक्ष्य अपीलकर्ता वीरेंद्र यादव और दो मृत अपीलकर्ताओं, श्याम नारायण यादव और राम नारायण यादव के

“अस्वीकरण: अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।”



संबंध में शेष रहता है। यह भी अभियोजन गवाह-1 और अभियोजन गवाह-2 के बयानों में आया है कि मृतक की पत्नी ने अभियुक्त श्याम नारायण यादव की पत्नी के विरुद्ध चुनाव लड़ा था। श्याम नारायण यादव, राम नगीना यादव के स्कूल में शिक्षक भी था। इसलिए श्याम नारायण यादव और मृतक के बीच चुनावी विवाद का मंतव्य भी श्याम नारायण यादव के विरुद्ध स्थापित किया गया था।

19. अपीलकर्ता के विद्वान अधिवक्ता का अगला तर्क यह है कि अभियोजन गवाह-1, अभियोजन गवाह-2 और अभियोजन गवाह-3 के बयान विश्वसनीय नहीं हैं। मृतक की हत्या किसी और ने की थी और अभियोजन गवाह-1 ने अभियुक्त राम नगीना यादव और अन्य के साथ अपनी दुश्मनी के कारण प्रथम सूचना रिपोर्ट दर्ज कराई थी। अभियोजन गवाह-2 और अभियोजन गवाह-3 को अपीलकर्ताओं को झूठा फंसाने के लिए चश्मदीद गवाह के रूप में खड़ा किया गया था।

20. इस तर्क में कोई बल नहीं है क्योंकि अभियोजन गवाह-2 और अभियोजन गवाह-3 घटना के तुरंत बाद अभियोजन गवाह-1 के पास पहुंच गए थे, जो घटना लगभग शाम 7.30 बजे हुई थी और प्रथम सूचना रिपोर्ट रात 8.45 बजे दर्ज की गई थी। इसलिए अपीलकर्ताओं के विरुद्ध झूठी प्रथम सूचना रिपोर्ट दर्ज कराने के लिए विचार-विमर्श करने का अधिक समय नहीं था।

21. उठाया गया अगला तर्क यह है कि अभियोजन गवाह-2, धनई राजभर, एक हितबद्ध गवाह था क्योंकि पंपिंग सेट की पासबुक में उसका नाम मृतक और दो अन्य लोगों के साथ संयुक्त रूप से दर्ज है। उपरोक्त पासबुक अपीलकर्ता द्वारा विचारण न्यायालय के समक्ष बचाव साक्ष्य में प्रस्तुत की गई थी। विचारण न्यायालय ने पाया है कि उपरोक्त पासबुक 5.8.2001 को बनाई गई थी, जबकि अभियोजन गवाह-2 की प्रति-परीक्षा 28.7.2001 को हुई थी। इसलिए

“अस्वीकरण: अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।”



विचारण न्यायालय ने सही रूप से धारित किया है कि यह पासबुक अभियोजन गवाह-2 की प्रति-परीक्षा के बाद तैयार करवाई गई थी और बचाव पक्ष द्वारा दस्तावेजी साक्ष्य में दाखिल की गई थी।

22. अपीलकर्ता के विद्वान अधिवक्ता का अगला तर्क यह है कि अभियोजन गवाह-2 और अभियोजन गवाह-3 घटना के केवल संयोगवश गवाह हैं और उनकी गवाही बहुत विश्वसनीय नहीं है।

23. हम पाते हैं कि अभियोजन के मामले के अनुसार मृतक, अभियोजन गवाह-2 और अभियोजन गवाह-3 एक साथ आ रहे थे जब मृतक को अभियुक्तों द्वारा रोका गया और उस पर गोलियां चलाई गईं।

24. अभियोजन गवाह-2 और अभियोजन गवाह-3 अपनी जान बचाने के लिए भागे और अभियोजन गवाह-1 के पास पहुंचे। अभिलेख पर मौजूद गवाहों के बयानों से, यह प्रतीत नहीं होता है कि अभियोजन गवाह-2 और 3 संयोगवश गवाह थे जब विचारण न्यायालय के समक्ष उनकी प्रति-परीक्षा की गई थी और विचारण न्यायालय के समक्ष दर्ज अभियोजन गवाह-2 और अभियोजन गवाह-3 के बयानों में ऐसा कुछ भी नहीं है जो हमें यह मानने के लिए विवश कर सके कि वे घटना के संयोगवश गवाह थे।

25. घटना का स्थान संदेहास्पद नहीं है क्योंकि अभियोजन गवाह-6 ने घटना स्थल से खून से सनी और सादी मिट्टी एकत्र की थी। मृतक की साइकिल भी घटना स्थल पर पाई गई थी।

26. हालांकि, हम पाते हैं कि विवादित घटना 5.8.1998 को शाम 7.30 बजे हुई। विवेचना अधिकारी द्वारा तैयार किए गए नक्शा-नजरी में प्रकाश के किसी स्रोत का उल्लेख नहीं है और न ही तथ्य के अभियोजन गवाहों, अभियोजन गवाह-2 और अभियोजन गवाह-3 ने प्रकाश के

“अस्वीकरण: अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।”



स्रोत के बारे में कुछ कहा है। अभियोजन गवाह-2 ने स्वीकार किया कि बाजार में बल्ब थे लेकिन घटना के समय वे चालू नहीं थे। हम पाते हैं कि जब घटना हुई तब केवल शाम के 7.30 बजे थे। अगस्त के महीने में शाम 7.30 बजे इतना अंधेरा नहीं होता है कि एक चश्मदीद गवाह द्वारा अच्छी तरह से पहचाने जाने वाले सह-ग्रामीण को नहीं पहचाना जा सके। गांव में लोग एक-दूसरे को उनके हाव-भाव से पहचान सकते हैं।

27. हम आगे पाते हैं कि ललकारने की भूमिका के अलावा, अपीलकर्ता राम नगीना यादव और श्याम नारायण यादव (अब मृत) को कोई अन्य भूमिका नहीं सौंपी गई है। उन्हें कोई हथियार नहीं सौंपा गया है और उन्हें सौंपा गया मंतव्य किसी दस्तावेजी साक्ष्य के माध्यम से इस आशय से साबित नहीं किया गया था कि मृतक राम नगीना यादव के स्कूल के विरुद्ध शिकायतें करता था और इसलिए उन्होंने अन्य अभियुक्तों को उसे मारने के लिए ललकारा। हालांकि अन्य तीन अपीलकर्ताओं, अर्थात् वीरेंद्र यादव, राम नारायण यादव और बदन राजभर पर मृतक पर चार फायर करने का आरोप था और उनमें से तीन गोलियां उसे लगीं। मृतक के शरीर पर आग्नेयास्त्र के प्रवेश के तीन घाव पाए गए हैं और घटनास्थल से एक खाली कारतूस भी बरामद किया गया था। इसलिए मृतक की पोस्टमार्टम रिपोर्ट से वीरेंद्र यादव, राम नारायण यादव और बदन राजभर की भूमिका के संबंध में अभियोजन के मामले की संपुष्टि होती है।

28. यह आपराधिक न्यायशास्त्र का स्थापित सिद्धांत है कि आगे की संपुष्टि के अभाव में भी दोषसिद्धि का निर्णय पारित करने के लिए विश्वसनीय प्रत्यक्ष साक्ष्य पर्याप्त है, जैसा कि **उत्तर प्रदेश राज्य बनाम कृष्ण गोपाल और अन्य, (1988) 4 एससीसी 302** के वाद में सर्वोच्च न्यायालय द्वारा अभिनिर्धारित किया गया है।

“अस्वीकरण: अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।”



29. इस मामले में चिकित्सा साक्ष्य ने अभियोजन के मामले का पूरी तरह से समर्थन किया है। त्वरित प्रथम सूचना रिपोर्ट ने स्पष्ट रूप से अपीलकर्ताओं, वीरेंद्र यादव, राम नारायण यादव और बदन राजभर को झूठा फंसाने की संभावना को समाप्त कर दिया। बचाव पक्ष ऊपर नामित तीन अपीलकर्ताओं की भूमिका के संबंध में अभियोजन गवाह के बयानों में किसी भी तात्त्विक विरोधाभास को इंगित करने में विफल रहा।

30. सूचनाकर्ता के विद्वान अधिवक्ता ने प्रस्तुत किया है कि ललकारना सक्रिय भागीदारी के समान है और उन्होंने **कृष्णन और अन्य बनाम केरल राज्य (1996) 10 एससीसी 508** के सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय पर भरोसा किया है।

31. हमने पाया है कि अभियुक्तों, राम नगीना यादव और श्याम नारायण यादव को ललकारने की भूमिका सौंपी गई थी और उनके विरुद्ध मंतव्य स्थापित किया गया था कि चूंकि वे स्कूल के प्रधानाचार्य और शिक्षक थे तथा मृतक उनके स्कूल के विरुद्ध शिकायतें करता था, इसलिए उन्होंने सह-अभियुक्तों को ललकार कर उसकी हत्या करवा दी। हालांकि हमने यह नहीं पाया कि उनके द्वारा स्थापित अपराध का मंतव्य कोई दस्तावेजी साक्ष्य पेश करके या स्कूल या शिक्षा विभाग से कोई गवाह प्रस्तुत करके साबित किया गया था कि मृतक राम नगीना यादव और श्याम नारायण के स्कूल की शिकायत करता था। इसके अलावा अभियोजन गवाह-2 ने स्वीकार किया है कि उसने विवेचना अधिकारी के समक्ष राम नगीना यादव और श्याम नारायण यादव को ललकारने की कोई भूमिका नहीं सौंपी थी। पहली बार उसने केवल न्यायालय में उन्हें ऐसी भूमिका सौंपी।

32. **कुलदीप यादव और अन्य बनाम बिहार राज्य, एआईआर 2011 (एससी) 1736** के वाद में सर्वोच्च न्यायालय ने अभिनिर्धारित किया कि भारतीय दंड संहिता की धारा 149 की सहायता

“अस्वीकरण: अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।”



से किसी व्यक्ति को दोषसिद्ध करने से पहले, न्यायालय को सामान्य उद्देश्य की प्रकृति के संबंध में स्पष्ट निष्कर्ष देना चाहिए और यह कि वह विधिविरुद्ध था। **अलाउद्दीन मियां और अन्य बनाम बिहार राज्य 1989 एआईआर 1456 (एससी)** के वाद में सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय का भी यही सिद्धांत है। इस वाद में अपीलकर्ता राम नगीना यादव का अन्य अभियुक्तों के साथ सामान्य उद्देश्य साबित नहीं हुआ था।

33. श्याम नारायण यादव और मृतक के बीच उनकी पत्नियों के संबंध में चुनावी विवाद था। अपीलकर्ता राम नगीना यादव को अपराध का ऐसा कोई मंतव्य नहीं सौंपा गया था। उसे एक और मंतव्य सौंपा गया था कि मृतक उसके स्कूल की शिकायत करता था, इसलिए वह उससे नाराज था, लेकिन अभियोजन पक्ष द्वारा किसी विश्वसनीय मौखिक या दस्तावेजी साक्ष्य के आधार पर इसे साबित नहीं किया गया।

34. इसके अलावा, अपीलकर्ता राम नगीना यादव को सौंपी गई ललकारने की भूमिका बहुत कमजोर प्रकार का साक्ष्य है, जैसा कि **जैनुल हक बनाम बिहार राज्य, 1974 एआईआर एससी 45** में सर्वोच्च न्यायालय द्वारा अभिनिर्धारित किया गया है। सर्वोच्च न्यायालय ने अभिनिर्धारित किया कि चश्मदीद गवाहों में बातों को बढ़ा-चढ़ाकर बताने और अधिक से अधिक अभियुक्तों को शामिल करने की प्रवृत्ति होती है।

35. इसलिए हमारा विचार है कि जीवित अपीलकर्ता, राम नगीना यादव, जिसने आपराधिक अपील संख्या 2457 वर्ष 2002 प्रस्तुत की है, को संदेह का लाभ दिया जाना चाहिए, लेकिन विचारण न्यायालय द्वारा अपीलकर्ता वीरेंद्र यादव की दोषसिद्धि और दंडादेश को बरकरार रखा जाना चाहिए और आपराधिक अपील संख्या 2495 वर्ष 2002 को खारिज किया जाना चाहिए।

“अस्वीकरण: अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।”



36. अपीलकर्ता, वीरेंद्र यादव पहले से ही जमानत पर है, उसके जमानत बंधपत्र रद्द किए जाते हैं और प्रतिभूतियों को उन्मोचित किया जाता है। उसे निर्देश दिया जाता है कि वह तत्काल आत्मसमर्पण करे और शेष सजा भुगते।

37. आपराधिक अपील संख्या 2457 वर्ष 2002 राम नगीना यादव के संबंध में स्वीकार की जाती है और आपराधिक अपील संख्या 2495 वर्ष 2002 वीरेंद्र यादव के संबंध में खारिज की जाती है।

38. कार्यालय को निर्देश दिया जाता है कि वह विचारण न्यायालय का अभिलेख वापस भेजे और दो सप्ताह के भीतर विचारण न्यायालय को इस निर्णय से अवगत कराए।

(न्यायमूर्ति विनय कुमार द्विवेदी) (न्यायमूर्ति सिद्धार्थ)

9 जून, 2026

अतुल क्र. श्री.

“अस्वीकरण: अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।”